नागमती का विरह वर्णन

नागमती का विरह-वर्णन 'पद्मावत' की प्रसिद्धि का आधार है। यह विरह-वर्णन विरही के मन का मर्मांतक उद्घाटन करता है। यहाँ विरह-वेदना किसी स्तर पर नहीं, बल्कि गहराई से मन को छूती नजर आती है। इसकी प्रशंसा हिन्दी साहित्य में सब हुई है। इस विरह-वर्णन में प्रेम-भाव, मनुष्य-प्रकृति, कल्पना-तत्त्व सब आपस में मिल गये हैं। विरह की तीव्रता इतनी है कि काल्पनिक लगने वाली बातें भी यथार्थ लगने लगती हैं। सामान्य तौर पर मनुष्य पशु-पक्षी से बात नहीं कर सकता, पर विरह में सब कुछ संभव है। इस वेदना में नायिका भौंरे और कौवे से सहानुभूति पाने की आशा करती कहती है — "पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा! हे भौंरा हे काग।
सो धनि बिरहे जरि मुई तेहिक धुवाँ हम लाग॥"

नागमती प्रेम की पीर से इतनी व्याकुल है कि वह भौंरे और कौवे से बात करने लगती है। वेदना की तीव्रता में वह उन्हीं के द्वारा अपने प्रियतम को संदेश भेजना चाहती है। उनके प्रति व्यंग्यपूर्ण शब्दों का प्रयोग करती है। इस प्रसंग के घनानंद याद आते हैं जो बादलों को सुजान के आँगन में बरसने को कहते हैं।

रानी नागमती विरहावस्था में रानीपन भी भूल जाती है। एक साधारण स्त्री की तरह पति को देखती है। उसका वियोग भी साधारण नारी का वियोग है। इस वियोग में दरबारी ठाठ नहीं है। पति हारे में नहीं है। कौवे छप्पर छाने का समय आ गया है। वर्षा का चौमासा आ गया है। पेखि हे — पुहुम सरवर सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाह मंदिर को छावा॥

साधारण नारी की तरह उसका ऐसा सोचना स्वाभाविक है। विरह में रानी और सामान्य नारी में कोई अंतर नहीं रह जाता है। इसीलिए यह उसका स्वाभाविक रूप है।

है। गुहोत्तम रानी को कला का परिचय अभिलाषा है जहाँ वे बैठे हैं, विरह को, लोक कला की कल्पना को सफल होते हैं। यह अनुभव को कहता है। ऐसी पूर्व परा सहिष्णु अनुकूल है तो है ही यह जानता है मनोनुकूल पाने में वे सफल हुए ही हैं; साथ-ही लोक कथा भी बन गये हैं।

नागमती रानी बनकर हाथ तोता मुनाती पाठकों की सहानुभूति उतना नहीं बटोर पाती जाय अमात्यजन के लिए लिख रहे थे न कि राजदरबार के लिए। जायसी का अनुभव लोक साक्षात्कार का है इसलिए वर्गीय चेतना उस पर हावी दीखती है नागमती लोक कथा की रानी है किसी दरबार की नहीं। लोक कथा में राजा-रानी एक प्रतीक होते हैं। जायसी कालीदास की तरह दरबारी वर्णन में सिद्धहस्त नहीं हो सकते थे। कालिदास कालगत अभिजात समाज से था। जिस प्रकार रामकथा लेखन में केशवदास और तुलसी दोनों को पढ़ कर तुलसी जन-जन में पैठ गये और केशव सिर्फ बड़े-पढ़े लोगों में पहुँच पाये। लेकिन नागमती का स्वमान्य नारी जैसा चित्रण चित्त उसे सत्य बना देता है।

जायसी ने नागमती के दुःख को गौरवपूर्ण बना दिया है। पद्मावत लौकिकता को अलौकिकता होने लिए हुए है। अत्युक्तियाँ भी गंभीर हैं।

"दुधके कुछ कुछ जल को कुल रोई।
रक्त आँसु घूँघची बन बोई।"

यहाँ देखते हैं कि नागमती की आँखों के आँसू नहीं रक्त टपक रहे हैं। कुल में पूरी प्रकृति समाहित है। नागमती के आँसू सच्चा नक्षत्र है बरसते बारिश के रूप में बरसते हैं। ये कुणाल विरही के मन के नितांत अनुकूल है। हम देखते हैं कि विरह के प्रभाव से सच्चा कोयले होगया है

राहु-केतु भी काले हो गये हैं और पलाश के फूल भी दहकते अंगारे की तरह लाल हो गये हैं, एक कवि अपनी रचनात्मकता की गहरी अनुभूति व प्रकृति को भी अनुकूल बना लिया है।

विरह दशा में सुखदायक वस्तुएं भी दुखदायक हो गयी हैं। मानव मन की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है। शरद की चंद्रमा कुछ ज्वाला भी उसे जलाता प्रतीत होता है। उसे चांदनी रात के सौंदर्य कहां दिखेगा। यहां भी नायिका की अपना रानीपन भूल गयी है।

जायसी ने मनुष्य को सामान्य मानव के तब और भावों को प्रदान करते हैं जब वे नागमती की उस सुख दुखी दिखाते हैं जब दूसरों के प्रिय आये हुए हैं उसमें वैषम्य की भावना सहजता में प्रस्फुटित हुआ है। नागमती देखती है कि चित्रा में सरोवरों में मछली भर गये पपीहा का प्रियतम आ गया स्वाति में सीप मोतियों से भर गया पर उसके मोती स्वरूप रत्नसेन नहीं आया।

नागमती विरह में इस कदर अकुलाती उसे हिरामन सुआ कभी अंकुर, कभी वामन कभी इन्द्र दिखता है, वह रत्नसेन पर कम हिरामन पर ज्यादा केंद्रित है। यहां हिरामन पर गुरु सा दिखाकर जायसी ने सामान्य नारी की विरहानुभूति को दर्शाया है। यही उनकी महानता है कि यह साधारणता ही हृदयग्राही बन गया है।

जायसी द्वारा रानी नागमती को साधारण नारी के रूप में दिखाना उनकी कमी नहीं विशेषता है। परंपरा को अपनाते हुए वे मानव हृदय की अनुभूतियों को इस कदर पेश करते हैं कि वह सजीव लगता है। जायसी साधारण जनता के कवि हैं, राजा-रानी की कथा कहते हुए भी वे उसमें साधारणता पिरो देते हैं।

जायसी लोकजीवन, अनुभव से सिंचित कवि हैं। दरबार उनका विषय है, संवेदना नहीं। नागमती को साधारण नारी के रूप में चित्रित कर उन्होंने

'पद्मावत' को लोक जीवन की संवेदना है, जो इसे दिया है, इसलिए वे लोक में इतने प्रसिद्ध है।

कुमार रजनीकान्त रंजन